अवनीश त्रिपाठी

सुल्तानपुर, उत्तर प्रदेश

शब्द पानी हो गए

तुम सलीके
से उतर कर याद में
छंद नयनों से
नया लिखने लगी,
मैं अभी तक
अर्थ भी समझा नहीं
और वंचक
शब्द पानी हो गए।।

गुलमुहर सी
देह का सौभाग्य पा
मन पलाशी
झूमता ही रह गया,
स्वप्न में बाँधा
उसे भुजपाश में
चूमता बस
चूमता ही रह गया।

रातरानी
चाँदनी तारे सभी
आकलन
विश्वास का करने लगे,
नींद को छेड़ा
किसी ने भी नहीं
स्वप्न के अहसास
धानी हो गए।।

हाथ पकड़े आ
गए हम भी पुलिन पर
फिर नदी का
भाव भी पढ़ने लगे,
घाट झुरमुट
और पगडण्डी सभी
नेह का
पर्याय ज्यों गढ़ने लगे।

मन हुआ आषाढ़,
सावन तन हुआ
गुदगुदी पुरवाइयाँ
करने लगीं,
रातभर हमने
कथानक जो बुने
भोर तक पूरी
कहानी हो गए।

ऊँघ रहा इतवार

बालकनी में
आकर बैठा
चाय लिए अखबार
लेकिन अब तक
ऊंघ रहा है
बिस्तर पर इतवार।

झाँक रहा है घर के भीतर
आकर नया उजास
शांत पड़े है कम्बल तकिये
बिस्तर पर बिंदास

अलसाई चादर
के नीचे
सपनों का भंडार।

मंजन,साबुन,शॉवर,गीजर
सुस्त पड़े हैं आज
हैंगर से लिपटी टॉवल को
पता समय का राज

बाथरूम में
बदल गया है
पानी का व्यवहार।

आधे जगे हुए टेरेस पर
गमलों के सब फूल,
चुप्पी साधे पड़े हुए हैं
योगासन को भूल,

हौले हौले
सहला करके
जगा रही कचनार।